❍ 06 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *याद की गुप्त मेहनत की ?*

➢➢ *पवित्र बनकर रहे ?*

➢➢ *एक "पॉइंट" शब्द की स्मृति से मन-बुधी को नेगेटिव के प्रभाव से बचाया ?*

➢➢ *सेवा का श्रेत्श भाग्य प्राप्त किया ?*

————————————————————

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ आत्मा शब्द स्मृति में आने से ही रुहानियत के साथ शुभ-भावना भी आ जाती है। पवित्र दृष्टि हो जाती है। *चाहे भल कोई गाली भी दे रहा हो लेकिन यह स्मृति रहे कि यह आत्मा तमोगुणी पार्ट बजा रही है तो उससे नफरत नहीं करेंगे, उसके प्रति भी शुभ भावना बनी रहेगी।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं लाइट हाउस, माइट हाउस हूँ"*

〰✧ अपने को लाइट हाउस और माइट हाउस समझते हो? जहाँ लाइट होती है वहाँ कोई भी पाप का कर्म नहीं होता है। *तो सदा लाइट हाउस रहने से माया कोई पाप कर्म नहीं करा सकती।* सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे।

〰✧ ऐसे अपने को पुण्य आत्मा समझते हो? पुण्य आत्मा संकल्प में भी कोई पाप कर्म नहीं कर सकती। *और पाप वहाँ होता है जहाँ बाप की याद नहीं होती। बाप है तो पाप नहीं, पाप है तो बाप नहीं।* तो सदा कौन रहता है? पाप खत्म हो गया ना? जब पुण्य आत्मा के बच्चे हो तो पाप खत्म।

〰✧ तो आज से 'मैं पुण्य आत्मा हूँ पाप मेरे सामने आ नहीं सकता' यह दृढ़ संकल्प करो। जो समझते हैं आज से पाप को स्वपन में भी, संकल्प में भी नहीं आने देंगे वह हाथ उठाओ। *दृढ़ संकल्प की तीली से 21 जन्मों के लिए पाप कर्म खत्म।* बापदादा भी ऐसे हिम्मत रखने वाले बच्चों को मुबारक देते हैं। यह भी कितना भाग्य है जो स्वयं बाप बच्चों को मुबारक देते हैं। इसी स्मृति में सदा खुश रहो और सबको खुश बनाओ।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

>> *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सेवा में बहुत अच्छा लगे हुए हो लेकिन लक्ष्य क्या है? सेवाधारी बनने का वा कर्मातीत बनने का? कि दोनों साथ-साथ बनेंगे? ये अभ्यास पक्का है? *अभी-अभी थोडे समय के लिए यह अभ्यास कर सकते हो?*

〰✧ अलग हो सकते हो? या ऐसे अटैच हो गये हो जो डिटैच होने में टाइम चाहिए? कितने टाइम में अलग हो सकते हो? मिनट चाहिए, एक मिनट चाहिए वा एक सेकण्ड चाहिए? एक सेकण्ड में हो सकते हो? *पाण्डव एक सेकण्ड में एकदम अलग हो सकते हो?*

〰✧ *आत्मा अलग मालिक और कर्मेन्द्रियाँ कर्मचारी अलग, यह अभ्यास जब चाहो तब होना चाहिए।* अच्छा, अभी-अभी एक सेकण्ड में न्यारे और बाप के प्यारे बन जाओ। पॉवरफुल अभ्यास करो बस, मैं हूँ ही न्यारी।

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚

〰✧ फ़रिश्ते स्वरूप की स्थिति में सदा रहते हो? फ़रिश्ते स्वरूप की लाइट में अन्य आत्माओं को भी लाइट ही दिखाई देगी। *हद के एक्टर्स जब हद के अन्दर अपने एक्ट करते दिखाई देते हैं तो लाइट के कारण अति सुन्दर स्वरूप दिखाई देते हैं। वही एक्टर, साधारण जीवन में, साधारण लाइट के अन्दर पार्ट बजाते हुए कैसे दिखाई देते हैं? रात दिन का अन्तर दिखाई देता है ना?* लाइट का फोकस उनके फीचर्स को परिवर्तित कर देता है। *ऐसे ही बेहद ड्रामा के आप हीरों- हीरोइन एक्टर्स, अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने से क्या दिखाई देंगे? अलौकिक फ़रिश्ते।* साकारी की बजाय सूक्ष्म वतनवासी नज़र आयेंगे। साकारी होते हुए भी आकारी अनुभव होंगे। हर एक्ट हरेक को स्वत: ही आकर्षित करने वाला होगा। *जैसे आज हद का सिनेमा व ड्रामा कलियुगी मनुष्यों का आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। छोड़ना चाहते हुए और न देखना चाहते हुए भी हद के एक्टर्स की एक्ट अपनी ओर खींच लेती है, लेकिन उसका आधार लाइट है। ऐसे ही इस अन्तिम समय में माया के आकर्षण की अति के बाद अन्त होने पर, बेहद के हीरो एक्टर्स जो सदा जीरो स्वरूप में स्थित होते हुए जीरो बाप के साथ हर पार्ट बजाने वाले हैं और दिव्य ज्योति स्वरूप वाले जिनकी स्थिति भी लाइट की है और स्टेज पर हर पार्ट भी लाइट में हैं अर्थात् जो डबल लाइट वाले फ़रिश्ते हैं वे हर आत्मा को स्वत: ही अपनी तरफ़ आकर्षित करेंगे।*

｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚ ••☆••✧｡°˚

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप का राज सबको सुनाकर वर्सा दिलाना"*

➳ _ ➳ *शिवबाबा परमधाम से आकर, मेरे दामन में सुखों के... खुशियों के फूल बिखेरेंगे... मुझे अपना बनाकर... इस कदर मेरा ख्याल रखेंगे... अपनी श्रीमत देकर, पुरानी दुनिया के दुःख भरे जंजाल से निकाल... सुखों की बाड़ सजाकर... मुझे खिलता हुआ रूहानी गुलाब सा महकाएँगे...* ऐसा तो मैने कभी सोचा भी न था... मैं तो इस सांसारिक दुनिया के चक्कर में फंसकर उन्हें भूल गयी थी... लेकिन उन्होंने सदा मेरा ध्यान रखा... बस इस मीठे चिंतन ने आँखों को भिगो दिया... और भीगी पलकें लिए प्यार के सागर बाबा को निहारने मैं आत्मा... वतन में उड़ चली...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को उज्ज्वल भविष्य का आधार श्रीमत को समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... सदा यह याद रखो कि *तुम बच्चे ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा से स्वर्ग की बादशाही पाने के लिये राजयोग सीख रहे हो... शिवबाबा तुमको जो समझाते हैं... वह फिर तुम्हें औरों को समझाना है...* जैसे तुम निरन्तर एक बाप की याद में रह... हर कर्म करते हो... वैसे ही सभी आत्माओं को बाप का परिचय दे... इस संगमयुग के महत्व को समझाओ... उन्हे भी सतयुगी वर्से का अधिकारी बनाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा के सच्चे प्यार में सुख स्वरूप आत्मा बनकर कहती हूँ :-* "मेरे मीठे मीठे अविनाशी बाबा... *मुझे इस जीवन में आप... अविनाशी साजन के रूप में... प्रेम करने का श्रेष्ठ अवसर मिला... खुद भगवान ने आकर मुझे अपनी प्रियतमा बनाया... वाह!! यह तो मेरा परम् सौभाग्य है... जो मुझे अविनाशी साजन मिला है...* मैं आप द्वारा सिखाये राजयोग का अभ्यास... आदि-मध्य-अंत का ज्ञान... सभी आत्माओं को बता रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को विश्व कल्याणकारी की भावना से ओतप्रोत बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर पिता को पाकर, जिन सच्ची खुशियों को, मीठे सुखों को, आप बच्चों ने पाया है... इन मीठी खुशियों से हर दिल आंगन को भर आओ... सबके कौड़ी जैसे जीवन को हीरे तुल्य बनाने की कला सिखा दो... *सबके जीवन में सुखों की बहारों को खिलाने वाले... सदा के सुखदाई बन, मीठे बाबा के दिल में मुस्कराओ..."*

➺ _ ➺ *मैं आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य शिक्षाओं को अपने दिल में गहरे समाकर कहती हूँ :-* "मीठे बाबा... मैं आत्मा आपके मीठे प्यार में, असीम सुखों की अनुभूतियों से भरकर... *आपसे प्राप्त वर्से के अनुभव की दौलत को हर दिल पर... दिल खोलकर... लुटा रही हूँ...* अपने प्यारे बाबा का परिचय... हर दिल को देकर... सबको आप समान खुशियों की अधिकारी बना रही हूँ..."

❊ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा में श्रेष्ठ संस्कारो को पक्का कराते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे राजदुलारे बच्चे... *शिवपिता से जो आपने... अपने आत्मिक सत्य को जाना है... उस परम सत्य को सदा स्मृति में रखना... अर्थात स्मृति स्वरूप बन सदा ईश्वरीय नशे में रह हर आत्मा को इस परम् सत्य से रूबरू करवाना...* तो तुम्हारा यह जीवन सहज ही सफल हो जायेगा..."

➺ _ ➺ *मैं आत्मा ईश्वरीय यादों के खजानों से सम्पन्न होकर, मीठे बाबा से कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा... आपने मुझ आत्मा के जीवन में आकर, मुझ आत्मा को विश्व कल्याण की सुंदर भावना से भर दिया है... *मैं आत्मा हर पल सबको सुख देने की भावना दिल में लिये हुए हूँ... सबको मीठे बाबा से मिलवाकर, सबके जीवन में आनंद और खुशियों के फूल खिला रही हूँ...* बेहद के पिता का परिचय देकर... सबके जीवन को सुख भरी मुस्कान से सजा रही हूँ... *मीठे बाबा को अपनी मीठी भावनायें सुनाकर मैं आत्मा... अपने कर्म क्षेत्र पर आ गयी..."*

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✷ *"ड्रिल :- बाप से मुक्ति जीवन-मुक्ति का वर्सा लेने के लिए इस अन्तिम जन्म में पवित्र जरूर बनना है*"

➳ _ ➳ अपने प्यारे परमपिता परमात्मा से पवित्रता की प्रतिज्ञा करने वाली "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ"। इस स्वमान में स्थित होते ही मुझे अनुभव होता है कि मुझ में पवित्रता की अनन्त शक्ति है। *मैं पवित्रता का सूर्य हूँ और मुझसे पवित्रता की किरणें निकल - निकल कर कर निरन्तर चारों ओर फैल रही हैं जो वायुमण्डल को शुद्ध और पावन बना रही हैं*। पवित्रता की किरणें चारों ओर फैलाते हुए मैं आत्मा अब अपने साकारी तन से बाहर आ जाती हूँ और पवित्रता के सागर पतित पावन अपने शिव पिता परमात्मा के पास चल पड़ती हूँ उनके पावन धाम, परमधाम की ओर।

➳ _ ➳ पांच तत्वों की बनी साकारी और उससे परे फ़रिशतों की आकारी दुनिया को पार कर मैं पहुंच जाती हूँ उस निराकारी आत्माओं की दुनिया परमधाम में जहां मेरे शिव पिता परमात्मा रहते हैं। मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं स्वयं को पतित पावन शिव पिता परमात्मा के सम्मुख देख रही हूँ। *बाबा से आ रही पवित्रता की अनन्त किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और मुझ आत्मा पर चढ़ी विकारों की कट को भस्म कर मुझे पावन बना रही है*। मेरा पवित्रता का औरा बढ़ता जा रहा है। मैं रीयल गोल्ड बनती जा रही हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे बाबा मुझे पवित्रता का शुद्ध भोजन खिलाकर शक्तिशाली बना रहे हैं।

➳ _ ➳ पवित्रता की अनन्त शक्ति स्वयं में भरकर अब मैं परमधाम से नीचे आ जाती हूँ और फरिश्तों की आकारी दुनिया मे प्रवेश कर जाती हूँ। *मैं देख रही हूँ फरिश्तो की इस आकारी दुनिया में सामने खड़े अपने सम्पूर्ण पवित्र फ़रिशता स्वरूप को*। अपने इस सम्पूर्ण पवित्र फ़रिशता स्वरूप में मैं आत्मा प्रवेश कर जाती हूँ और पहुंच जाती हूँ बापदादा के सामने। *बापदादा की पावन दृष्टि से स्वयं को भरपूर कर "पवित्रता का अवतार" बन अब मैं फ़रिशता वापिस साकारी दुनिया में लौट रहा हूँ*।

➳ _ ➳ मुझ फ़रिश्ते के अंग - अंग से पवित्रता की श्वेत रश्मियां निकल कर विश्व के कोने - कोने में फैल रही हैं। *बापदादा के साथ कम्बाइंड स्वरूप में, सारे विश्व का भ्रमण करता हुआ मैं बाबा से पवित्रता की शक्तिशाली किरणे लेकर नीचे धरती पर प्रवाहित कर रहा हूँ*। मुझ से निकल रही पवित्रता, सुख शांति और शक्ति की किरणें सारे विश्व में फ़ैल रही हैं और पतित हो चुकी सर्व आत्माओं को छू कर उन्हें पावन बना रही हैं। मुझ से निकल रही किरणे सभी आत्माओं को पाप मुक्त होने में मदद कर रही हैं। मुझसे चारों और पवित्र वायब्रेशन फ़ैल रहे हैं।

➳ _ ➳ *विश्व की सर्व आत्माओं को पवित्र वायब्रेशन देकर अब मैं अपने फ़रिशता स्वरुप से अपने ब्राह्मण स्वरूप में लौट आता हूँ इस स्मृति के साथ कि पावन बनने और सारे विश्व को पावन बनाने की जो जिम्मेवारी भगवान ने मुझे दी है उस जिम्मेवारी को पूरा करना ही अब मेरा लक्ष्य है*। उस जिम्मेवारी को पूरा करने और बाबा से वर्सा लेने के लिए अब मैं गृहस्थ व्यवहार में रहते सदा स्वयं को कमल पुष्प आसन पर विराजमान रखती हूँ

➳ _ ➳ जैसे कमल का फूल भले खिलता कीचड़ में है किन्तु कीचड़ में रहते हुए भी उससे न्यारा रहता है और अपनी खुशबू से सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। *उसी प्रकार घर गृहस्थ में रहते मैं भी कमल पुष्प समान पवित्र रह अपनी रूहानियत की खुश्बू चारों और फैला रही हूं*। अपनी मनसा वृति को पवित्र बना कर, सुख स्वरूप बन अब मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को सुख, शांति की प्राप्ति का अनुभव करवा रही हूँ।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं एक "पॉइन्ट" शब्द की स्मृति से मन-बुद्धि को नेगेटिव के प्रभाव से बचाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं नम्बरवन विजयी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा संगम पर सेवा का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं पदमापदम भाग्यवान आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं निष्काम सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आप लोग सभी नये वर्ष में सिर्फ कार्ड देकर हैपी न्यु इयर नहीं करना लेकिन कार्ड के साथ हर एक आत्मा को दिल से रिगार्ड देना... *रिगार्ड का कार्ड देना और एक-दो को सौगात में छोटा-मोटी कोई भी चीजें तो देते ही हो, वह भी भले दो लेकिन उसके साथ-साथ दुआयें देना और दुआयें लेना...* कोई नहीं भी दे तो आप लेना... अपने वायब्रेशन से उसकी बद-दुआ को भी दुआ में बदल लेना... तो *रिगार्ड देना और दुआयें देना और लेना - यह है नये वर्ष की गिफ्ट...* शुभ भावना द्वारा आप दुआ ले लेना... अच्छा।

✺ *ड्रिल :- "रिगार्ड का कार्ड देकर दआयें देने और दआयें लेने का

अनुभव"*

➳ _ ➳ अपना लाइट का सूक्ष्म आकारी फ़रिशता स्वरूप धारण कर, अपने खुदा दोस्त, *अपने शिव साथी से अपने मन की बात कहने के लिए मैं अपने साकारी शरीर रूपी घर से बाहर निकलती हूँ और पहुंच जाती हूँ अपने शिव साथी के पास अव्यक्त वतन में...* यहां पहुंच कर मैं अपने खुदा दोस्त का आह्वान करती हूं जो पलक झपकते ही अपना धाम छोड़ कर, इस अव्यक्त वतन में पहुंच जाते हैं और आकर अव्यक्त ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में विराजमान हो जाते हैं...

➳ _ ➳ अब मैं देख रही हूं अपने साथी, शिव बाबा को लाइट माइट स्वरुप में अपने बिल्कुल सामने... मुझे देख कर मुस्कराते हुए बापदादा मुझे अपने पास बुलाते हैं... *मुझे गले लगा कर, न्यू ईयर विश करते हैं और गिफ्ट के रूप में अपनी सर्वशक्तियों, सर्व गुणों और सर्व खजानों से मुझे भरपूर कर देते हैं...* अपने प्यारे मीठे शिव साथी से मीठी दृष्टि लेते हुए मन ही मन मैं अपने आप से सवाल करती हूं कि अपने भगवान साथी को मैं रिटर्न में न्यू ईयर की क्या गिफ्ट दूँ...! मेरे मन की बात मेरे साथी तुरन्त पढ़ लेते हैं... चेहरे पर गुह्य मुस्कराहट लाकर मेरे मीठे बाबा मुझे सामने देखने का इशारा करते हैं...

➳ _ ➳ सामने एक बहुत ही सुंदर लिफ्ट को देख कर मैं प्रश्नचित निगाहों से अपने प्यारे मीठे खुदा दोस्त को देखती हूँ... *बाबा मुस्कराते हुए कहते हैं:- "ये न्यू ईयर का एक विशेष तोहफा है..." ये लिफ्ट साधारण लिफ्ट नही, ये दुआओं की लिफ्ट है*... यह कहकर बाबा मुझे उस लिफ्ट के अंदर ले जाते हैं... लिफ्ट में बैठते ही, स्मृति का स्विच ऑन करते ही मैं सेकेंड में तीनों लोकों की सैर करने लगती हूँ... *बाबा के मधुर महावाक्य सहज ही स्मृति में आने लगते हैं कि "ब्राह्मण जीवन मे दुआयें लिफ्ट का काम करती हैं जो पुरुषार्थ को तीव्र करती हैं..."*

➳ _ ➳ इन महावाक्यों की स्मृति में खोई, अपने ख़ुदा दोस्त के साथ इस लिफ्ट में बैठी मैं पूरे वतन की सैर कर, आनन्दित हो रही हूं... तभी *बाबा की आवाज सुनाई देती है कि:- "इस लिफ्ट को पाने का साधन भी दुआओं की

गिफ्ट है" अर्थात दुआयें देना और दुआयें लेना..." इसलिए नये वर्ष में सिर्फ कार्ड देकर हैपी न्यु इयर नहीं करना लेकिन कार्ड के साथ हर एक आत्मा को दिल से रिगार्ड देना... कोई नही दे तो भी आप देना... उनकी बद-दुआ को भी दुआ में बदल देना... शुभ भावना द्वारा आप दुआ ले लेना... अपने सभी आत्मा भाइयों को दुआओं की गिफ्ट देना, यही बाबा के लिए आपके गिफ्ट का रिटर्न है...*

➳ _ ➳ बाबा को न्यू ईयर की गिफ्ट का रिटर्न देने के लिए अब मैं अपने सम्बन्ध संपर्क में आने वाली सर्व आत्माओं को बाबा के सामने वतन में इमर्ज करके, जाने अनजाने में हुई अपनी हर गलती के लिए उनसे माफी मांग रही हूँ... उनकी गलतियों के लिए भी अपने मन में उनके लिए कोई मैल ना रखते हुए उन्हें दिल से माफ कर रही हूँ... *बाबा से आ रही सर्वशक्तियां मुझ से निकल कर उन आत्माओ पर पड़ रही हैं और एक दूसरे के लिए मन में जो कड़वाहट थी वो धुल रही है... मन में अब किसी के लिए भी कोई बोझ कोई भारीपन नही है...*

➳ _ ➳ परमात्म लाइट माइट से अब मैं भरपूर हो कर वापिस लौट रही हूँ... और अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ फिर से अपने साकारी शरीर रूपी घर में प्रवेश कर रही हूँ... *किसी भी आत्मा के लिए अब मेरे मन मे कोई द्वेष नही है*... अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को अब मैं स्नेह और रिगार्ड दे कर सहज ही उनकी दुआओं की पात्र बन रही हूँ... *इस संगमयुग पर "दुआयें देना और दुआयें लेना" यही मुझ ब्राह्मण आत्मा का कर्तव्य है...* इस बात को सदा स्मृति में रख, हर आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखते हुए अब मैं दुआओं की लिफ्ट पर बैठ सदा उड़ती कला का अनुभव कर रही हू...

⨀_⨀ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔